सम्पादकीय

विश्वगुरुदीप आश्रम शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित मासिक शोधपत्रिका का वर्ष 2022 का षष्ठम् अंक आपके करकमलों में अर्पित करते हुए अत्यधिक हर्ष का अनुभव हो रहा है। भारतीय धर्म-संस्कृति के शोधलेखों का यह संग्रह विद्वानों द्वारा सराहा जा रहा है। विद्वानों द्वारा नियमित भेजे जा रहे शोधलेख हमारा मनोबल बढ़ा रहे हैं व पत्रिका के महत्त्व को भी आलोकित कर रहे हैं। पूर्व अंकों में सभी उच्चस्तरीय विद्वानों के लेख प्रकाशित हुए हैं।

इस अंक में सर्वप्रथम डॉ. नारायणशास्त्री काङ्कर के 'राष्ट्रोपनिषत् प्रस्तावनाशतकम्' के कतिपय पद्य प्रकाशित किये गये हैं, जो गुरुशिष्यपरम्परा के गौरव को प्रदर्शित करने के साथ साथ आत्मचिन्तन की प्रेरणा प्रदान करने वाले हैं। तत्पश्चात् डॉ. रामदेव साहू द्वारा लिखित 'ब्रह्माण्डमण्डलपरिज्ञानम्' शोधलेख में ब्रह्माण्ड में विद्यमान पाँच आधिदैविक मण्डलों की स्थिति तथा उनमें विद्यमान तत्त्वों एवं पदार्थों की उत्पत्ति का विज्ञान प्रदर्शित किया गया है। डॉ. रघुवीरप्रसाद शर्मा द्वारा लिखित 'वर्णसमीक्षावैशिष्ट्यम्' शोधलेख में पं. मधुसूदन ओझा द्वारा विरचित वर्णसमीक्षा ग्रन्थ के वैशिष्ट्य को दर्शाते हुए उसकी व्याकरण शास्त्रीय उपयोगिता बतलायी गयी है। तत्पश्चात् महामण्डलेश्वर परमहंस स्वामी श्री महेश्वरानन्दपुरी जी द्वारा लिखित 'Yoga Sutras of Patanjali' शोधलेख में 'तदा द्रष्टुः स्वरूपेऽवस्थानम्' सूत्र की व्याख्या करते हुए योगशास्त्रीय तत्त्वालोचन को प्रस्तुत किया गया है। श्रीमती अन्या वुकादिन द्वारा लिखित 'The Triad of Suffering' शोधलेख में सांख्यदर्शन के अनुसार आध्यात्मिक, आधिभौतिक तथा आधिदैविक दुःखों के स्वरूप को बतलाया गया है। अन्त में एच.डी. वेलंकर द्वारा लिखित 'भक्ति की वैदिक अवधारणा' शोधलेख में ऋग्वेद के सप्तम मण्डल में निरूपित देववाद के भक्तिविषयक संदर्भों को प्रस्तुत कर वैदिककालीन भक्ति के स्वरूप की मीमांसा की गयी है।

आशा है, सुधी पाठक इन्हें रुचिपूर्वक हृदयंगम करने में अपना उत्साह पूर्ववत् बनाये रखेंगे।

शुभकामनाओं सहित....

-डॉ. सुरेन्द्र कुमार शर्मा